Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part - II (Hons)
Paper - IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

Notes

1. Descartes: "Mind - body relation."
देकार्त :(शरीर - मन का सम्बन्ध)

GRB BOOKS

देकार्त एक प्रसिद्ध गणितज्ञ, वैज्ञानिक, धार्मिक विचारक और बुद्धिवादी दार्शनिक थे। उनके दर्शन में सर्वत्र हमें द्वैतवाद की झलक मिलती है। इसलिए उन्हें उग्र द्वैतवादी भी कहा गया है।

देकार्त ने शरीर और मन के सम्बन्ध की समस्या द्रव्यों के आधार पर उठायी है। देकार्त के अनुसार - "द्रव्य वह है जिसकी स्वतन्त्र सत्ता हो और जो अपनी सत्ता के लिए किसी अन्य वस्तु पर निर्भर न हो।"

देकार्त के इस विचार के अनुसार संख्यात्मक दृष्टि से द्रव्य को अवश्य एक ही होना चाहिए और वह God होगा। लेकिन देकार्त का कहना है कि substance दो प्रकार का होता है।

1. Primary substance (मुख्य द्रव्य)
2. Secondary substance (गौण द्रव्य)

1. मुख्य द्रव्य - देकार्त के अनुसार वह है जिसका अपना निजि अस्तित्व हो और जो अपने अस्तित्व के लिए किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहे। मुख्य द्रव्य को ही देकार्त ने God कहा है।

2. गौण द्रव्य देकार्त के अनुसार द्रव्य वह है जो मुख्य द्रव्य को छोड़कर

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

अपने अस्तित्व के लिए किसी अन्य पर निर्भर नहीं करता है। ये गौण द्रव्य दो है —

1. Mind - (मन)
2. Body - (शरीर)

ये दोनों ही Secondary substance है और दोनों ही आपस में स्वतन्त्र होते हुए भी Primary substance पर निर्भर है। देकार्त का कहना है कि Mind or Body के अपने - अपने गुण है।

(1.) मन की विशेषता है ~~करना~~ विचार करना।

(2.) शरीर की विशेषता है विस्तार करना।

इसके अलावे देकार्त का कहना है कि Mind or Body एक दूसरे के विरोधी है।

1. मन विचार कर सकता है बढ़ नहीं सकता।

2. शरीर बढ़ सकता है सोच नहीं सकता।

कुछ दार्शनिकों का कहना है कि मन और शरीर एक दूसरे के विरोधी है, यह ठीक है लेकिन वास्तविक जगत में दोनों एक दूसरे से अलग नहीं पाये जाते हैं। इसका मतलब है कि किसी न किसी रूप से मन और शरीर में कोई न कोई सम्बन्ध है

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

तो वह सम्बन्ध कौन सा है? देकार्ते ने इसे बताने के लिए एक काल्पनिक मनोवैज्ञानिक व्याख्या का सहारा लिया है। जिनके अनुसार —

1. सर्वप्रथम उद्दीपक (exciting) वस्तु का प्रभाव निरीक्षक की इन्द्रियों पर पड़ता है।

2. इस प्रभाव के फलस्वरूप इन्द्रियों की नस तन्तु की प्राण शक्तियाँ (animal spirits) उद्दीप्त होकर Pineal gland पहुँचती है और वहाँ अपनी छाप छोड़ देती है।

3. इसी Pineal gland की छाप आत्मिक चेतना का संयोग या उत्साहक कारण (Stimulating cause) होती है।

1. इस प्रकार Pineal gland ही Mind or Body की मिलान स्थली है। इन दोनों में क्रिया प्रतिक्रिया का सम्बन्ध है।

P
Sensation
↓
Nerve Impulse
↓
Animal spirits
↓
Pineal gland
↓
Brain + Mind

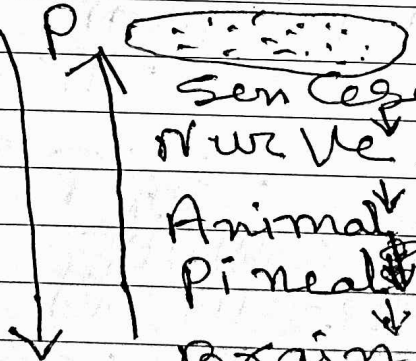

देकार्ते ने Pineal gland को आत्मा का वास स्थान माना है क्योंकि यह ग्रन्थि अविभाजित है। इसलिए आत्मा शरीर के मध्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS
Notes

भागों में नहीं व्यापती है। देकार्त के अनुसार जब आत्मा को शारीरिक व्यापार पैदा करना होता है तब पिनियल ग्रन्थि में स्थित प्राण शक्तियों को वह प्रभावित करती है और वहीं से उद्दीप्त होकर प्राणशक्तियाँ स्नायु और पिण्डों (gland) में पहुँचकर शारीरिक व्यापार उत्पन्न करती है। देकार्त ने शरीर और मन के आपसी सम्बन्ध की व्याख्या Horse - Rider की उपमा के सहारे की है। इसके अनुसार आत्मा और शरीर में वही सम्बन्ध है जो एक घुड़सवार और घोड़े में है जिसपर घोड़े को एड़ी लगाकर घुड़सवार प्रेरित करता है इसी तरह आत्मा शरीर को प्रभावित करती है। जिस प्रकार घुड़सवार के शरीर में घोड़ा गति और स्पन्दन उत्पन्न करता है इसी तरह शरीर भी आत्मा या चेतना को झुकाता है। देकार्त ने शरीर और मन के आपसी सम्बन्ध की जो व्याख्या की है वह पूर्णतया असन्तोषजनक है।

1 देकार्त में शरीर और मन के सम्बन्ध की समस्या मुख्य और गौण द्रव्य के आधार पर उनकी है इनके अनुसार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

Mind or Body दोनों गौण द्रव्य है गौण द्रव्य उसे कहते हैं जो मुख्य द्रव्य को छोड़कर किसी अन्य पर निर्भर नहीं करता है। देकार्त के अनुसार God ही मुख्य द्रव्य है और Mind एवं Body गौण द्रव्य है। गौण द्रव्य होने के कारण Mind or Body एक दूसरे से स्वतंत्र होते हुए भी मुख्य द्रव्य God पर निर्भर करते हैं। अर्थात - Mind and Body Independent each other but they depend upon God.

देकार्त ने इस समस्या को ठीक ढंग से नहीं उठाया है क्योंकि उनके अनुसार द्रव्य वह है जिसका अपना निजी अस्तित्व हो और जो दूसरे पर निर्भर न हो तो वैसी स्थिति में गौण द्रव्य की कल्पना बेकार है।

Mind or Body को देकार्त ने दो अलग-अलग ढंग से स्वीकार किया है। सैद्धान्तिक स्तर पर देकार्त ने यह स्वीकार किया कि Mind or Body दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। Mind सोच सकती है विस्तृत नहीं हो सकता। Body बढ़ सकता है सोच नहीं सकता।

व्यावहारिक स्तर पर देकार्त ने Mind or Body को ऐसे विरोधी न कर दोनों को स्वीकार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS Notes

की आपसी सम्बन्ध की एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या हमारे सामने प्रस्तुत किया जो वस्तुतः बौद्धिगम्य नहीं है।

3. अगर कुछ समय के लिए इनके व्याख्या की सच्चाई को स्वीकार कर ली जाय तो भी यह तथ्यात्मक नहीं है। यह देकार्त की कोरी कल्पना मात्र है। क्योंकि देकार्त ने मन और शरीर के मनोवैज्ञानिक व्याख्या के दौरान कुछ शब्दों का सहारा लिया है जैसे Nerves, Pineal gland जो मनोवैज्ञानिक क्षेत्र से बाहर की बात लगती है।

4. देकार्त ने Pineal gland को आत्मा के वास स्थान के रूप में स्वीकार किया है तो वह क्यों नहीं सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त रहता है। जिसका जवाब देकार्त ने देने का प्रयत्न नहीं किया।

5. देकार्त ने मन तथा शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या घोड़ और घुड़सवार की उपमा के माध्यम से भी करने का प्रयत्न किया है। लेकिन किसी चिज की व्याख्या उपमा के माध्यम से सही ढंग से नहीं की जा सकती।

6. थोड़ी देर के लिए अगर हम मान भी ले कि उन्होंने घोड़ और घुड़सवार के सहारे मन और शरीर की व्याख्या करने का प्रयास किया है तो भी

सुगम पास-बुक AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes

GRB BOOKS

यह उपमा एक सही उपमा नहीं है क्योंकि जैसा कि देकार्त ने ही हमें बताया है कि मन और शरीर एक दूसरे के विरोधी हैं क्योंकि मन चेतनशील है जबकि शरीर अचेतन है परन्तु घोड़ा और घुड़सवार दोनों ही चेतन है कोई भी अचेतन नहीं है। तो एक चेतन पदार्थ से हम अचेतन की तुलना कैसे कर सकते हैं।

यह सही है कि देकार्त का मत यह अनिश्चित है। फिर भी उनके किये गये संकेतों को उनके बाद के विचारकों ने पल्लवित तथा पुष्पित किया है संयोगवाद को देकार्त ने समानान्तरवाद को स्पीनोजा ने तथा समानान्तरवाद के संशोधित रूप जिसे पूर्वस्थापित सामंजस्य कहते हैं लाइबनिज ने अपनाया है।

इसप्रकार देकार्त के शरीर और मन सम्बन्धी यही विचार हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS